

सत्य

सत्य संसार का सबसे महान सिद्धांत है। 'सत्य' मतलब सभी के लिए कल्याणकारी। इसलिए सत्य के बारे में व्यावहारिक बात यह है कि सत्य परेशान हो सकता है, परंतु पराजित कभी नहीं। जो विचार, आचार, कार्य सभी के लिए हितकारी हो वह पराजित नहीं हो सकता। भारत में कई सत्यवादी विभूतियां हुई हैं जिनका उदाहरण आज भी दिया जाता है जैसे राजा हरिश्चंद्र, सत्यवीर तेजाजी महाराज आदि। इन्होंने अपने जीवन में यह संकल्प कर लिया था कि भले ही जो कुछ हो जाए वह सत्य की राह को नहीं छोड़ेंगे।

'सत्य' का शाब्दिक अर्थ है सते हितम् यानी सभी का कल्याण। सत्य शब्द को सत् या सद् के रूप में भी लिखा जाता है। जैसे सद्विचार, सद्भावना, सदाचार, सत्कृत्य। अगर एक व्यक्ति सभी के भले के लिए बोलता हो, सभी के भले की भावना रखता हो, सभी के भले के लिए आचरण करता हो, सभी के भले के लिए कर्म करता हो तभी उसे सत्य माना जाएगा। एक व्यक्ति सभी का हित सामने रखकर बोलता है तभी वह सत्य बोल रहा है ऐसा माना जाएगा। मनुष्य स्वभावगत सत्य के प्रति श्रद्धा और असत्य के प्रति गुस्से का भाव रखता है। अर्थात् सत्य सुनना सभी को अच्छा लगता है।

व्यावहारिक जीवन में यह सभी चाहते हैं कि लोग हमारे साथ सत्य बोलें, सदाचरण करें और सहानुभूति प्रकट करें। मनुष्य अपनी श्रेष्ठता सत्य के द्वारा ही तो व्यक्त करता है। सत्य आत्मा का नैसर्गिक गुण है इस विशेषता के कारण ही मनुष्य अपने समीपवर्ती लोगों के साथ सत्य के व्यवहार की अपेक्षा किया करते हैं। चोर, बदमाश, लफंगे तक भी दूसरों से झूठ की बात सुनकर जल उठते हैं और इसका प्रतिकार लेने के लिए खड़े हो उठते हैं। हम दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं दूसरी बात है पर एक बात जो प्रत्येक प्राणी में समान रूप से दिखाई देती है वह यह है कि सभी सत्य के प्रति आदर भाव रखते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि सत्य ही आत्मा की अभिव्यक्ति है। सज्जनों का कथन है कि "परमात्मा यदि किसी के समक्ष प्रकट होना चाहे तो उसे प्रकाश से अपना शरीर और सत्य से अपनी आत्मा को धारण करना पड़ेगा।"

मानव जीवन की सुव्यवस्था का आधार सत्य है। हम सभी से सत्यानुसारण की अपेक्षा रखते हैं, इसका अर्थ यही हुआ कि लोगों को प्रसन्नता, आदर-भाव, व्यवस्था, स्वस्थ चिंतन परिपूर्णता और सुख की प्राप्ति सत्य से होती है। जब तक लोग पारस्परिक विश्वास प्राप्त नहीं कर लेते, तब तक किसी प्रकार का कार्य नहीं कर सकते। किसी से अधिक देर तक संपर्क भी स्थापित नहीं कर सकते।

इस बात की सत्यता का अनुमान आज की परिस्थितियों से लगाया जा सकता है कि दुकानदार लोग दूसरों को ठगने और अधिक धन कमाने की लालच से दूध में पानी, घी में वनस्पति, खोए में आटा मिलाकर ग्राहक की जेब काट लेते हैं। थोड़ी देर के लिए इस पर उन्हें बड़ी प्रसन्नता होती है किंतु दूसरे दिन बच्चा बीमार पड़ जाता है तो डॉक्टर के पास जाता है। डॉक्टर भी सस्ते मूल्य की दवाएं महंगे चार्ज लेकर उसे अनुचित मुनाफा कमाता है। डॉक्टर को वकील, वकीलों को फर्नीचर वाले, फर्नीचर वालों को इनकम टैक्स वाले, सारे के सारे एक ही जाल में बुरी

तरह से फंस जाते हैं। किसी को भी चैन नहीं मिल पाता। यह सारी व्यवस्था इस कारण है कि लोगों में ईमानदारी की प्रवृत्ति नहीं रही है और एक दूसरे को ठगने के कुचक्र में फंस कर सभी कोई घाटा उठा रहे हैं।

लोग समझते हैं कि दूसरों को धोखा देते रहना आसान है इससे वे अपनी सफलता का आसान तरीका मानते हैं किंतु थोड़ी ही में असलियत का पता चल ही जाता है। समय पर 'ढोल की पोल' खुले बिना नहीं रहती। जब सही स्थिति का पता चल जाता है तो सभी उससे घृणा करने लगते हैं दूर भागने लगते हैं। सच्चाई और ईमानदारी का एक मार्ग सांच को आंच की कहावत को चरितार्थ करता है।

सत्य की महिमा सदैव से ही गाई जाती रही है कुछ लोगों का लिखा है-

अश्वमेध सहस्रञ्च सत्यञ्च तुलया धृतम्।

अश्वमेध सहस्राद्धि सत्यमेव विशिष्यते॥

अर्थात् अश्वमेध फल और सत्य को तौला गया एक ओर हजार अश्वमेध यज्ञों के फल को रखा गया और दूसरी ओर एक सत्य के फल को तो सत्य का पलड़ा भारी रहा।

सत्कर्म करने की प्रेरणा इसलिए दी जाती है कि इससे लोगों का नैतिक विकास होता है सच्चे आदमी का नैतिक बल इतना प्रबल होता है कि इसकी तुलना 10000 हाथियों के बल के बराबर की जाती है बड़ी-बड़ी बौद्धिक शक्तियां मशीनी ताकतें और मानवीय संगठन भी सत्य के समक्ष पर आसन होते देखे गए हैं। हरिश्चंद्र की सत्य निष्ठा के समक्ष विश्वामित्र को घुटने टेक देने पड़े। महात्मा गांधी की वाणी में वह शक्ति थी कि ब्रिटिश साम्राज्य जैसी शक्तिशाली सत्ता को भी हथियार डाल देने पड़े। गांधी जी की वाणी सत्य से अनुप्राणित होती थी। मनुष्य की शक्ति उसका व्यक्तित्व और उसकी महानता सभी उसकी सच्चाई में समाहित है। इसलिए उसकी सर्वत्र प्रतिष्ठा भी की जाती है।

सत्य जीवन की कसौटी है इसमें तपाया हुआ मनुष्य सोने जैसा खरा निकल आता है।

सत्य के महत्व पर प्रसिद्ध सगुण भक्ति कवि अब्दुल रहीम खानखाना ने एक बड़ा ही मार्मिक दोहा प्रस्तुत किया है--

सांच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।

जाके हिरदय सांच है ताके हिरदय आप॥

अर्थात् परमात्मा वहीं निवास करता है जहां सच्चाई होती है। एक झूठ की तुलना तो सौ पापों के सामान की गई है।

सच्चा व्यक्ति जहां भी जाता है अपने चरित्र और व्यक्तित्व की छाप दूसरों पर डाले बिना नहीं रहता। वाक् शक्ति के द्वारा लंबे चौड़े प्रवचन कथा उपदेश दिए जा सकते हैं किंतु जिससे लोगों को प्रभावित किया जा सके दूसरों को

सम्मान की दिशा में गतिमान किया जा सके उस शक्ति का नाम सत्य है ऐसे लोगों का संपर्क चाहे वह दो घड़ी का क्यों ना हो सारे जीवन भर भूलता नहीं।

सत्यवान व्यक्ति कम बोलते हैं किंतु उनकी वाणी में जो माधुरी होता है उसका प्रभाव जादू जैसा पड़ता है उसके व्यवहार में सरलता होती है जो अनेकों दूसरों को खींच कर अपने पास बुला लेता है। सत्य के ईंट और गारे से बनी हुई जीवन की इमारत तेज तूफानों में भी सुदृढ़ खड़ी रहती है। बनावटीपन ढोंग छल और कपट की झोपड़ी तो थोड़ी सी हवा चलते ही उखड़कर दूर जा गिरते हैं। सच्चाई में ही वह बल होता है जो दूसरों को भी ऊंचे उठाता है। इस संसार में विजयी वे होते हैं जिनके जीवन सत्य से प्रकाशमान होते हैं। जीवन का प्राण और बल सत्य ही है।

बच्चों में सत्य मूल्य का विकास कैसे करें-

सत्य एक ऐसा मूल्य है जिसकी नींव बच्चों में बचपन से ही पड़ती है बच्चे अपने परिवार से ही सच बोलने की ओर अग्रसर होते हैं अतः माता-पिता, भाई-बहन, दादा-दादी आदि परिवार के सदस्यों के संस्कार बच्चों में यह मूल्य विकसित करने में सबसे पहले सहायक होते हैं।

बच्चे बहुत नाजुक मन के होते हैं बिल्कुल गीली मिट्टी की तरह। उनके व्यक्तित्व को जैसा चाहे वैसा आकार दिया जा सकता है। बच्चों को प्रारंभ से ही ऐसी सीख दे कि उनमें सच बोलने की भावना विकसित हो सके।

अक्सर बच्चे शिक्षक द्वारा सजा की डर से झूठ बोलते हैं। इसके लिए जरूरी है कि बच्चों को बचपन से ही अपने विचार और अपने मन की बात खुले तौर पर स्वतंत्र रूप से बोलने को मिले। यदि बच्चे कुछ गलत करते हैं तो उन्हें अभिभावक एवं शिक्षक समझाएं, उचित वातावरण दें, ताकि वह अपनी बात को स्पष्ट रूप से कहने में डरे नहीं।

3 से 7 वर्ष की उम्र के बच्चे थोड़ा ज्यादा झूठ बोलते हैं क्योंकि इस उम्र में वे सच और झूठ के बीच अंतर नहीं कर पाते वे अपनी कल्पनाओं को शब्दों में पिरो कर उसे दूसरों को बता कर सच का रूप देने का प्रयास करते हैं इसका मतलब यह कदापि नहीं कि आपका बच्चा झूठ बोलने लग गया है इसके लिए आपको उसका वास्तविक परिचय कराना होगा। उसकी मानने लायक इच्छाओं को पूरा करें और जो पूरी नहीं हो सकती है उसके लिए उसकी समझ पैदा करें। माता-पिता और शिक्षकों को अपने स्वयं के बर्ताव में पारदर्शिता रखना जरूरी है। अगर आप अपने बच्चे से कोई वादा (प्रॉमिस) करते हैं तो उसे जरूर निभाएं। उनको एहसास दिलाएं कि आप उन पर विश्वास करते हैं और वह कोई गलत काम नहीं करेंगे। अगर कोई गलती करेंगे भी तो उसको बताने से डरेंगे नहीं। अक्सर माता-पिता या शिक्षक स्वयं ही झूठ बोलते हैं तो वह कैसे अपने बच्चों से सच बोलने की उम्मीद कर सकते हैं। आप उनके रोल मॉडल हैं यह बात आपको कभी भी नहीं भूलना चाहिए।

बच्चे की ईमानदारी और सच्चाई पर उसे शाबाशी दें, इससे उन्हें प्रोत्साहन मिलेगा। माता-पिता एवं शिक्षक बच्चों को डांटे व पिटाई ना करें बल्कि प्यार से उन्हें सही बात सिखाएं।

सत्य मूल्य पर महापुरुषों के विचार-

"सुंदरता सच की मुस्कान है जब वह खुद अपना चेहरा आईने में निहारती है"

"सत्य परेशान हो सकता है पराजित नहीं"

"पृथ्वी सत्य की शक्ति द्वारा समर्थित है यह सत्य की शक्ति ही है जो सूरज को चमक कर हवा को भेज देते हैं दरअसल सभी चीजें सत्य पर निर्भर करती हैं।" चाणक्य

शिक्षक बच्चों में सत्य मूल्य विकसित करने के लिए क्या करें-

डर भय मुक्त वातावरण बनाए

अपनापन जैसा व्यवहार दें

सकारात्मक टिप्पणी दें

बच्चे की हर बात सुने

स्वयं एक आदर्श स्थापित करें

पाठ्य पुस्तकों पर एक दृष्टि-

हमारी पाठ्य पुस्तकों हिंदी, संस्कृत एवं महान व्यक्तित्व की पुस्तकें यहां तक कि विज्ञान और गणित की पुस्तकों में भी नैतिक मूल्यों पर बात करने के लिए पर्याप्त अवसर हैं। शिक्षकगण अपनी पाठ्य पुस्तकों के साथ सत्य मूल्य पर इन पाठों की सहायता से बात कर सकते हैं-

कक्षा 4 हिंदी 'जब मैं पढ़ता था'

कक्षा 4 हिंदी 'भक्ति - नीति माधुरी'

कक्षा 6 संस्कृत पाठ 15 'नीतिश्लोकाः'

कक्षा 8 सच्ची वीरता (सरदार पूर्ण सिंह) कक्षा 8 पाठ 11 आत्मनिर्भरता (रामचंद्र शुक्ल)

कक्षा 8 अनिवार्य संस्कृत 'बाल प्रतिज्ञा' कक्षा 8 अनिवार्य संस्कृत 'विभक्तिनाम प्रयोगाः'

महान व्यक्तित्व की किताब में सत्य राजा हरिश्चंद्र, महात्मा बुद्ध, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, महात्मा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री आदि महान पुरुषों के व्यक्तित्व के द्वारा सत्य मूल्य का विकास बच्चों में किया जा सकता है। अतः शिक्षक इन पुस्तकों पर एक दृष्टि अवश्य डालें।

नमिता सिंह, वाराणसी